प्यारी मां

दुलारी मां
जीवन की संगिनी है
मेरी प्यारी मां

दिन भर वह काम करती
दिन भर वह सहती
थकान होने पर भी
कभी चेहरे पर थकान महसूस न होने देती

प्यारी मां
दुलारी मां
ममता की मूरत
दया और त्याग से
है वह जग में दुलारी मां

मां बनकर इस जहांन को
जन्नत बना देती
पिता का आसरा बनकर
ना उनकी शान को कभी कम होने देती
जब भी विपदा आई उनके बच्चों पर
मां दुर्गा का रूप धारण कर
सब विपदा को हर लेती

प्यारी मां
दुलारी मां
जग में सबसे न्यारी
सबसे प्यारी है मेरी प्यारी मां

कभी दोस्त बन जाती
कभी हमसफर बनकर
हमारा हाथ थाम लेती
जब जब हमें हारा हुआ देखा
जब जब हमें थका हुआ देखा
अपने आंचल का सहारा देकर
हमें अच्छाई का पाठ पढ़ा कर
हमारी थकान है दूर कर देती
हमे जीवन में आगे बढ़ने की
और अग्रसर कर देती

प्यारी मां
दुलारी मां
जीवन की संगिनी है
मेरी प्यारी मां

डॉ. कीर्ति

संसार इक जाल है

मोह माया का जंजाल है
मनुष्य भोग वासना में लिप्त होकर
नित कर रहा व्यभिचार है
न पाप का पता
न पुण्य का पता
संसार के जाल में फंसकर
नित कर रहा दुराचार है
संसार इक जाल है
पारिवारिक संबंधों का जंजाल है
कभी अपनों ने सताया
कभी परायो ने तरसाया
धन के वशीभूत होकर
संबंधों ने भी है रुलाया
न आज का पता है
न कल का पता है
और न आने वाले वक्त के लिए
इकट्ठा किये जा रहा मौत का संताप है
संसार इक जाल है
जिसमें नित होता मनुष्य से अपराध है
अपने पराए लगने लगे
पराए अपने लगने लगे
अपने पराए के मोह माया में फंसकर
नित कर रहा मनुष्य संबधों को खराब है
संसार इक जाल है
मोह माया का जंजाल है

ISSN:2583-8849